OM-10- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 27-Jul-21 1:48 PM Page 1

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -23 अंक - 10 अगस्त -II-2021 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 8.50

जिनकी दिव्य मुस्कान अनेकों के कष्ट हर लेती

जिनकी मुस्कान अनेकों के कष्ट हर लेती, जिनकी दृष्टि पाने के लिए लोगों के कदम रुक जाते, जिनके सफल प्रशासन को देख सभी प्रशासनिक अधिकारी उनसे यह कला सीखना चाहते, जिनकी पवित्रता व सरलता पर स्वयं भगवान भी बलिहार जाते, जिन्होंने अनेकों को जीवन दान दिया, जिन्होंने प्यार देकर अनेकों को जीना सिखाया - ऐसी थीं हमारी महान दादी प्रकाशमणि।

यूं तो इस धरा पर अनेक महानात्माओं का अर्विभाव हुआ और होता रहेगा, जिन्होंने अनेकों को महान बनाया, लाखों लोगों को प्रभु मिलन कराया और परमात्मा के महान कार्य का सफलता व कुशलता पूर्वक संचालन किया। आज भी प्रतिदिन अनेकों के मानस पटल पर उनकी छवि उभर आती है। और 25 अगस्त को तो सारा ब्राह्मण परिवार उनके प्रेम व अपनेपन को स्मरण करके भावविभोर हो जाता है। उनकी याद में निर्मित प्रकाश स्तम्भ प्रतिदिन असंख्य ब्राह्मणों को योग की दिव्य अनुभूतियां कराता है।

आत्मिक प्रेम की प्रतिमूर्ति

कुशल प्रशासक के साथ वे समस्त ईश्वरीय परिवार की स्नेहमयी दादी भी थीं। आज उनकी अनुपस्थिति विशाल ईश्वरीय परिवार में एक रिक्तता का आभास कराती है। वे निर्मल, निष्काम व आत्मिक प्रेम की प्रतिमूर्ति थीं। प्यार बांटना उनका प्रमुख कर्त्तव्य था। जब लोगों से गलती भी हो जाती थी तो वे प्यार का प्रसाद देना नहीं भूलती थीं। उनकी शिक्षाओं में भी कल्याण का भाव व प्यार समाया होता था। वे चाहती थी कि भगवान का ये परिवार पवित्रता व प्रेम से भरपूर हो।

पवित्र वायब्रेशन से परिवर्तन

लगभग तीन दशक पूर्व पाण्डव भवन में महामण्डलेश्वरों का एक धर्म सम्मेलन रखा गया था जिसमें अनेक संत महात्माओं ने हिस्सा लिया। दादी जी ने सभी को अपने पावन प्रेम में बांध लिया था। विरोधी सहयोगी बन गये और ग्लानि करने वाले प्रशंसक बन गये। एक प्रसिद्ध महामण्डलेश्वर ने तो मंच से भरी सभा में कह दिया कि मैं तो पूरा जीवन बाबा को व दादी को गाली ही देता आया हूँ। आज मुझे पता लगा कि वे कितनी महान हैं। उन्होंने अपना अनुभव सुनाते हुए दिल को स्पर्श करने वाली बात कही कि आज सवेरे जब दादी जी हमें सारे आश्रम घुमा रही थीं तो मैंने दादी जी का हाथ स्पर्श किया और मैं नतमस्तक हो गया, दादी जी के पवित्र वायब्रेशन देखकर। ऐसी पवित्र आत्मा इस धरा पर ढूंढ़ना भी असंभव है। आज से मैं दादी का भाई हूँ और दादी का जब भी बुलावा होगा, मैं दौड़ा चला आऊंगा। जितनी ग्लानि आज तक मैंने की है अब उससे सौ गुना प्रशंसा के पुष्प चढ़ाऊंगा। उन्हें इस तरह समर्पित होता देख, सभी धर्म-धुरंधर नतमस्तक हो गये। ऐसी थीं ईश्वरीय परिवार की आत्मा दादी प्रकाशमणि।

बहुत वर्ष पहले की बात है, हमारा ये रूद्र यज्ञ बहुत छोटा था। प्रथम बार 45 पत्रकार हमारे एक छोटे से सम्मेलन में आये। हिस्ट्री हॉल में दादी जी ने शब्दों से उनका इतना भावपूर्ण सत्कार किया कि वे मंत्रमुग्ध हो गये, उनकी यात्रा की थकान उतर गई, उन्हें लगा कि दादी तो हमारी है और अगले ही दिन भारत के अनेक अखबारों में छपा - प्रेम की देवी... दादी प्रकाशमणि।

भगवान से मिलाए भाग्यवान बनाया

हमने अत्यधिक सुख उस समय प्रतिदिन पाया, जब वे सवेरे भगवान के महावाक्य(मुरली) सुनाती थीं। उन्हें ये वरदान था। वे मुरली में रस भर देती थीं, सभा में परम आनंद की लहर छा जाती थी। हमारा तो वो एक घंटा जैसे कि पावरफुल योग में बीतता था। मुरली के समय अनेक बार उनकी याद आती है। वे चलता-फिरता फरिश्ता थीं। प्रारंभ में वे यज्ञ के सभी विभागों में जाती थीं, सबको अपनापन देती थीं, सबसे पूछती थीं- कुछ चाहिए? उनके ये शब्द सुनकर सबकी चाहना ही लोप हो जाती थी। सभी आश्चर्यवत होकर उन्हें निहारने लगते थे।

जब वे बीस हज़ार की सभा में पूछती थीं - बोलो क्या खाओगे, आईसक्रीम खाओगे? सभी उनकी उदारता व अपनेपन के समक्ष सिर झुका देते थे। सचमुच वे ही योग्य पात्र थीं इस महान आत्माओं के विशाल परिवार की चीफ बनने के।

लोग तो भगवान को प्यार करते हैं। अनेक ब्रह्मा वत्स भगवान का प्यार पाने के इंतज़ार में रहते हैं, परंतु हमने देखा, भगवान स्वयं उन्हें न केवल प्यार करते हैं बल्कि उन्हें बहुत सम्मान देते हैं। निःसंदेह दादीजी भी श्रेष्ठ योगी थीं, परमात्म-प्यार में मगन रहने वाली थीं। परंतु बाबा से उनका मिलन देखकर 'अबू मिन आदम' की कहानी मानस पटल पर उभर आती थी। सुना होगा आपने - अबू के स्वप्न में एक फरिश्ता आया जिसके हाथ में एक लिस्ट थी। अबू ने पूछा- 'ये क्या है?' फरिश्ते ने उत्तर दिया- 'ये उन लोगों की लिस्ट है जो भगवान को बहुत प्यार करते हैं।' अबू ने पूछा- 'इसमें मेरा नाम कहाँ है?' 'सबसे अंत में'- यह कहकर फरिश्ता लोप हो गया। दूसरी रात एक लिस्ट के साथ फरिश्ता पुनः प्रकट हुआ और अबू ने पुनः पूछा- 'आज किनकी लिस्ट है?' फरिश्ते ने फरमाया कि 'ये लिस्ट उनकी है जिन्हें भगवान बहुत प्यार करता है, इसमें सबसे ऊपर आपका ही नाम है'- यह कहकर फरिश्ता अदृश्य हो गया। यह सुनकर अबू प्रभु-प्रेम में मग्न हो गया।

ये वृत्तांत अत्यधिक सत्य है दादी प्रकाशमणि के लिए। क्यों उन्हें भगवान इतना प्यार करता था जो अव्यक्त होते समय बाबा ने उनका हाथ पकड़कर उन्हें अपनी समस्त शक्तियां दे दी थीं! क्योंकि वे निर्मल थीं, वे अनासक्त थीं, वे त्यागी व परोपकारी थीं।

उनका चित्त सभी के लिए शुभ-भावनाओं से भरा था, वे निर्विकारी थीं। उन्होंने भगवान द्वारा रचित रूद्र यज्ञ को सफल बनाया था, उसमें आने वाले विघ्नों को समाप्त किया था। सचमुच वे यज्ञ-रक्षक थीं।

वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू